By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
August 24, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 24

(Class BA Part I H.)

. शंकराचार्य का ब्रह्म और उसका लक्षण .

2. स्वरूप-लक्षण।

शंकराचार्य के अद्वैतवाद का मूल विषय ब्रह्म की एकमात्र सत्ता को स्थापित करना है। उन्होंने ब्रह्म की धारणा उपनिषदों से प्राप्त की और उसकी व्यख्या ब्रह्म सूत्र के आधार पर किया। अद्वैत वेदांत में ब्रह्म के दो लक्षण प्राप्त होते हैं:- तटस्थ लक्षण और स्वरूप लक्षण। तटस्थ लक्षण वह है जो आंतरिक स्वरूप ना होते हुए भी वस्तुओं से उसका भेद स्थापित करता हो। परंतु स्वरूप लक्षण वह है जो उसका अनिवार्य गुण हो अर्थात् आंतरिक स्वरूप लक्षण हो। ब्रह्म के विषय में शंकराचार्य कहते हैं कि ब्रह्म सच्चिदानंद है। जो सत् है, वही चित्त है, वही आनंद है।

राजा और कृषक के उदाहरण के द्वारा शंकराचार्य ब्रह्म के तटस्थ लक्षण की व्याख्या करते हैं। वह ब्रह्म के वास्तविक और अनौपाधिक स्वरूप को समझाने के लिए जादूगर का दृष्टांत देते हैं। जिस प्रकार जादूगर केवल उन्हीं लोगों के लिए अद्भुत है जो उसकी जादू से प्रभावित होते हैं और उसके द्वारा दिखाए गए जादुई खेल को सत्य मानते हैं। किंतु जो लोग उसके मायाजाल से प्रभावित नहीं होते, उनके लिए वह अद्भुत नहीं है। इसी प्रकार अज्ञानी लोगों की दृष्टि में जगत् सत्य है और ब्रह्म जगत का कारण या सृष्टिकर्ता है। परंतु तत्वज्ञानियों के लिए न तो कोई वास्तविक सृष्टि है और ना ही कोई वास्तविक सृष्टि का करनेवाला।

वस्तुतः शंकराचार्य की दृष्टि में ब्रह्म जगत में भी व्याप्त भी है और उससे अतीत भी है। परमार्थिक दृष्टि से जगत की कोई सत्ता ही नहीं है। यद्यपि यह व्यवहारिक दृष्टि से अस्तित्ववाद है; परंतु फिर भी अस्तित्व काल में अपने सत्ता के लिए ब्रह्म पर आश्रित रहता है। वह जगत के सुख-दुख, पाप-पुण्य आदि से वैसे ही प्रभावित नहीं होता, जैसे रंगमंच का पात्र राज्य लाभ या राज्य हानि से प्रभावित नहीं होता। पुनः जीव भी ब्रह्म से परमार्थातः अभिन्न ही है। जीव अज्ञान के कारण ब्रह्म से अपना भेद करते हुए अपने पृथक अस्तित्व का अनुभव करता है।